

ISSN: 23202467

सुवर्णान्तर

अन्तर्राष्ट्रीय साहित्यिक एवं शोध पत्रिका
“हिन्दी साहित्यिक”

त्रैमासिक पत्रिका



आरती पब्लिशिंग हाऊस एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स

आरती पब्लिशिंग हाऊस एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स युगांतर अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका

हेड आफिस : अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली – 110053

email: akhilesh_tiwari1979@yahoo.com

santoshtiwari05712@gmail.com website : www.yugantar.co.in

वर्ष 9 – अंक 35
जून 2018

युगांतर शोध पत्रिका
(A Peer-Reviewed Research Journal)
युजीसी के अनुमोदित पत्रिका सं. 64649

ISSN : 2320 2467

सम्पादक :	संतोष कुमार तिवारी
प्रधान सम्पादक :	प्रो. कामता प्रसाद त्रिपाठी (पीयूष)
सह-सम्पादक :	डॉ. विनय पाठक राज्य भाषा आयोग शिक्षा मंत्री (छ. ग.)
सम्पादक मण्डल :	प्रो. मिथिला प्रसाद त्रिपाठी (पूर्व कुलपति) पारिणी संस्कृति विश्व विद्यालय, उज्जैन प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी (पूर्व कुलपति) – संस्कृति विश्वविद्यालय, दिल्ली प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी, डॉ. हरी सिंह गौर – केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर (म. प्र.) डॉ. हरीश अरोडा – दिल्ली डॉ. हरनेक गिल – दिल्ली डॉ. कमलेश कुमारी डॉ. अम्बिकेश त्रिपाठी – इलाहाबाद प्रो. बी. एन. भालेराव – दिल्ली डॉ. रुचिरा डिंगरा – दिल्ली डॉ. ललिता त्रिपाठी – भोपाल डॉ. कविता भाटिया – दिल्ली डॉ. सीता लक्ष्मी – विषाखापट्टनम डॉ. आचार्य एस. शेषारत्नम – आंध्रविश्वविद्यालय डॉ. प्रतिभा पांड – मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर प्रो. आभा रूपेन्द्र पाल – पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर छत्तीसगढ़ प्रो. शुभ जोहरी – आर. टी. एम. विश्वविद्यालय, नागपुर प्रो. जे. पी. मिश्रा – रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर डॉ. शिवदयाल सिंह – महर्षि विश्वविद्यालय, अजमेर डॉ. जय शंकर पांडे – कानपुर डॉ. गोपाल कृष्ण शर्मा – विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन डॉ. समपा चौबे – रायपुर
प्रमुख प्रवासी सम्पादकीय सलाकार सीमित :	डॉ. विजय कुमार महेता – अध्यक्ष, अखिल विश्व हिन्दी समिति, न्यूयार्क अमेरिका प्रो. सत्येन्द्र श्रीवास्तव – केम्ब्रिज विश्वविद्यालय, केम्ब्रिज (यू. के.) डॉ. शेर बहादुर सिंह – विश्व हिन्दी सेवी, न्यूयार्क, अमेरिका डॉ. पदमेश गुप्त – अध्यक्ष, यू. के. हिन्दी समिति लंदन डॉ. सुरेश ऋतुपर्ण – टोक्यो विश्वविद्यालय, जापान

अनुक्रमाणिका

1.	सांझा सरकारों में संसदीय प्रणाली के स्वरूप की उभरती प्रवृत्तियों / डॉ. ब्रज किशोर	1 - 4
2.	गंदी बस्ती और अपराध / रिचा सेनगुप्ता सहायक प्राध्यापक	5 - 7
3.	रामकथा : कुछ अशोभित प्रसंग / राजकुमार, (सहा.प्राध्यापक)	8 - 14
4.	सड़क यातायात का आर्थिक विकास पर प्रभाव-मण्डला जिले के विशेष संदर्भ में / डॉ. झामलाल रसिया	15 - 18
5.	सुल्तान बहलोल लोदी का काल (1451-1489 ई.) का ऐतिहासिक अवलोकन / डॉ. जानकी शरण शुक्ल	19 - 24
6.	वृद्धों के मानवाधिकार का संरक्षण एवं क्रियान्वयन / डॉ. शालिनी शर्मा	25 - 27
7.	संभ्रांत परिवेश की लेखिका : डॉ. श्रीमती कृष्णा अग्निहोत्री / ज्योति शर्मा	28 - 31
8.	राष्ट्रीय संचेतना के विकास में बघेलखण्ड की भूमिका (सन् 1857 से 1948 तक) / रिया सिंह	32 - 34
9.	प्राच्यशिक्षाव्यवस्था की वर्तमान शिक्षापद्धति में उपादेयता : एक विमर्श / डॉ. आशुतोष पारीक	35 - 38
10.	व्यंग्य कथ्य और स्वरूप / संजीत कुमार	39 - 40
11-	A Study to Physio - Psychological Fitness amongst Middle Age Women in Bhilai Township Mrs. Jyoti Bala Choubey / Dr. Rupam Ajeet Yadav	41 & 44
12-	"a comparative study of effect of type of family on the creativty of class 9 th studyents" / Dr. Anita Shrivastava	45 & 50
13.	"संयुक्त परिवार के बदलते प्रतिमानों के सामाजिक कारण (रीवा जिले के विशेष संदर्भ में)" / अनुराधा पाण्डेय	51 - 56
14.	/ अरविन्द सिंह चौहान	57 - 63
15.	भारत में संसदीय लोकतंत्र चुनौतियां एवं समस्यायें / दुर्गा खत्री	64 - 67
16. ✓	भारतीय सूफी काव्य परम्परा : एक समीक्षात्मक दृष्टि / अवधेश कुमार / डॉ. राजेन्द्र यादव/ डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय,	68 - 74

भारतीय सूफी काव्य परम्परा : एक समीक्षात्मक दृष्टि

अवधेश कुमार (शोध अध्यापक)
डॉ. राजेन्द्र यादव (असिस्टेंट प्रोफेसर)
हिन्दी विभाग
डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
सागर (मध्य प्रदेश)
Email-awadheshkkt@gmail.com
Mob.-8853309388

भारतीय सूफी काव्य परम्परा में प्रेम का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। सूफियों का प्रेम आस, विश्वास और भरोसे वाला है तथा इनकी साधना-पद्धति, पंथमार्ग और साध्य तीनों प्रेम में ही हैं। यदि हम 'सूफी' शब्द के विषय में बात करें तो इस सदर्भ में विद्वानों के विभिन्न मत हैं। सामान्य तौर पर देखा जाय तो 'सूफी' शब्द 'सूफ' से बना है जिसका तात्पर्य 'सफेद ऊन' से है और इसका अर्थ है उस वर्ग के पहनावे से है। कुछ विद्वान 'सूफी' शब्द का अर्थ 'सफा' मानते हैं, जिसका आशय 'पवित्र' विचारधारा से है। इसी क्रम में कुछ अन्य विद्वानों ने 'सूफी' शब्द को 'सोफिया' से जोड़ा है, जिसका अर्थ 'विद्या' अर्थात् ज्ञान है। विभिन्न मतों की कड़ी में यह मत अधिक प्रासंगिक है कि 'सूफी' शब्द का सम्बन्ध यूनानी शब्द 'सोफोस' से है, जिसका आशय 'बुद्धिमान और ज्ञानी' व्यक्ति से है। 'सोफोस' के बारे में यह तर्क दिया जाता है कि यह अंग्रेजी के 'फिलोसोफी' शब्द से लिया गया है, जिसका हिन्दी पर्याय 'दर्शन' होता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि 'सूफी' शब्द का अर्थ 'बुद्धिमान और ज्ञानी' से है। यह मत तर्कपूर्ण और संगत भी लगता है।¹ इस मत के सम्बन्ध में पाश्चात्य दार्शनिक रेनाल्ड निकल्सन लिखते हैं कि "अरबी, फारसी, तुर्की तीनों भाषाओं में इस्लामी रहस्यवादी के लिए 'सूफी' शब्द प्रयुक्त है। गोल्डहाइजर ने सूफी मत को ईसाइयों के नव्य-प्लेटोवाद और नास्तिकवाद से जोड़ा है।"²

भारत में सामान्य तौर पर इस्लाम के रहस्यवादी साधक 'सूफी' नाम से जाने जाते हैं। हमारे देश में लगभग बारहवीं शताब्दी के मध्य में ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती के आगमन से सूफी कवियों का उदय होता है। सूफी संतों में ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती, बाबा शेख फरीद तथा हजरत निजामुद्दीन औलिया तथा अमीर खुसरो आदि ने अपने अनुभव एवं ज्ञान से उत्पन्न आध्यात्मिक चिंतन के द्वारा लोकजीवन के कल्याण अर्थात् 'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय' को ही जीवन का कर्तव्य मानते हैं। ये साधक सांसारिक मोह-माया से विरत सौम्य, सहज और परमात्मा के प्रेम में सदैव बेसुध रहते हैं। इनका मानना है कि प्रेम से ही परमात्मा को पाया जा सकता है और प्रेम की इसी परम्परा की छाप सभी सूफी कवियों और उनकी कृतियों में देखने को मिलती है। सूफी प्रेममार्ग का सहारा लेकर लौकिक से अलौकिक जीवन की परिणति के मार्ग को आलोकित करते हैं। सूफी संत ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों एवं भेद-भावों से लोगों को बाहर निकालकर सामाजिक समरसता का संदेश देते हैं। एकेश्वरवाद में गहरी आस्था होने के कारण समाज में व्याप्त वर्ग, जाति, धर्म और संप्रदायगत भेद का इनके यहाँ कोई स्थान नहीं होता। मनुष्यता ही इनके जीवन का पहला धर्म है और इसी कारण वे हिन्दू-मुस्लिम को एक ही परमात्मा की संतान मानते हैं। 'प्रेम से ही परमात्मा मिलते हैं' इनके इस उपक्रम से भारतीय जनता ख्वाजा की सहजता, आत्मीयता और आस्था की गुलाम हो गयी। वे कहते थे कि "क्या हिन्दू! क्या मुसलमान! क्या सिक्ख! क्या ईसाई! ख्वाजा की वारगाह में होते थे सब भाई-भाई।"

सूफियों के बारे में विद्वानों का अभिमत है कि ये भारत में आकर उत्तर और दक्षिण दोनों भू-भागों को अपना साधना स्थल बनाते हैं। इस प्रकार भारत में सूफी काव्य परम्परा की भारत में दो जमीनें हैं-उत्तर के हिन्दी सूफी कवि और दक्षिण के हिन्दी सूफी। इस काव्य परम्परा को लेकर डॉ. बच्चन सिंह के कहा है कि "हिन्दी सूफी कवियों की जमीन भारतीय है जबकि दक्षिण के हिन्दी सूफी कवियों की जमीन ईरानी। हिन्दी सूफी कवियों की कथाएँ यहाँ की लोक प्रचलित कहानियों पर आधारित हैं, जबकि दक्षिणी हिन्दी के कवियों के कथाधार ईरानी काव्य में प्रयुक्त लोक-कथाएँ हैं। उनका रंग इस्लामी और ढंग ईरानी है। हिन्दी सूफी कवियों ने अपने जनपद की रीति-नीति, मौसम, ऋतुवर्णन, छन्द, कथानक-रूढ़ियाँ आदि को इस ढंग से अपनाया है कि उनके काव्य पूर्णतः भारतीय बन गये हैं।"³ हालांकि हिन्दी सूफी काव्य अरबी, फारसी और